“अस्मितावादी साहित्य विमर्श और डॉ.सूर्यनारायण रणसुभे की समीक्षा”

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड
पीएच.डी. (हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोधप्रबंधक का संक्षेपण

शोधकर्ता
श्री. जब्बारखान मियाखान मोकाशी

शोध – निर्देशक

डॉ. प्रदीप शिवराम सुर्यवंशी
सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
दयानंद कला महाविद्यालय,
लातुर.

मई २०१७

“अस्मितावादी साहित्य विमर्श और डॉ.सूर्यनारायण रणसुभे की समीक्षा”

अनुक्रमाणिका

अ.क्र.	अध्याय	अध्यायों के नाम
१.	प्रथम अध्याय	डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे व्यक्तित्व एवं कृतित्व
२.	द्विती अध्याय	अस्मितावादी साहित्य
३.	तृतीय अध्याय	अस्मितावादी साहित्य में डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे की समीक्षा
	चतुर्थ अध्याय	अन्य अस्मितावादी साहित्य में डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे की समीक्षा
	पंचम् अध्याय	अस्मितावादी साहित्य में डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे का योगदान
	षष्ठ अध्याय	उपसंहार
		संदर्भ सूची
		संदर्भ ग्रंथ सूची

“अस्मितावादी साहित्य विमर्श और डॉ.सूर्यनारायण रणसुभे की समीक्षा”

विषय प्रवेश :-

साहित्य समाज की चित्तवृत्तियों का संचित रुप होता है । समय के साथ मनुष्य के विचारों के अनुसार साहित्य में परिवर्तन होता । आधुनिक हिंदी साहित्य में विविध विधाओं का अन्वेषन हुआ है। भारतेंद्रु काल से हिंदी साहित्य मे आलोचनात्मक आलेख ग्रंथ प्रस्तुत और प्रकाशित होते रहै । हिंदी साहित्य म ें आलोचनात्मक लेखन की शुरुवात आ.रामचंद्र शुक्ल जी की है । समीक्षात्मक लेखन में. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ. रामविलास शर्मा, आ. नंददुलारे वाजपेयी, रामस्वरुप चर्तुवेदी, महाराष्ट्र के राजमल बौरा ओर डॉ. सुर्यनारायण रणसुभे जी की समीक्षात्मक लेखन हिंदी साहित्य को एक नई प्रोरणा ओर नवचेतना देने का कार्य करती है ।

प्रेरणा एवं विषय चयन :

आधुनिक साहित्य में विविध विधाओं पवर लेखन कार्य अध्ययन तिाा अनुसंधान हो रहा है । आज हम देख रहे है कि अच्छा वैचारिक लेखन के लिए कवि, लेखक और साहित्य कृति के गुण- दोषों की परख करना महत्वपुर्ण हे । जिससे साहित्यकारों को उसके गुण – दोषों के उजागर किया जाता है । उस कृति की समीक्षा या आलोचना एक अंहम भूमिका निभाजी है । भारतेन्दु युग से आलोचनात्क ग्रंथ लिखने की शुरुवात हुई है । आज आधुनिक युग मे समीक्षा एक विकसनशील विधा के रुप कार्यरत है ।

हिंदी साहित्य मे. महाराष्ट्र राज्य का विशेष योगदान रहा है । आधुनिक समीक्ष को में राजमल बोरा, डॉ. अर्जुन चव्हाण और डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे जी का नम प्रख्यात समीक्ष में बडे आदर से लिया जाता है । डॉ. रणसुभे जी का लेखन हिंदी साहित्य में. विशेष महत्व रखता है। इसलिए इस विषय को लेखर गुरुवर्य डॉ. प्रदिपव सूर्यवंशी जी से मिलकर विचार विमर्श किया, और अध्ययन के लिए अस्मितावादी साहित्य विमर्श और डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे की समीक्षा इस विषय का चुना किया ।

शोधकार्य का महत्व :

आधुनिक आलोचको में महाराष्ट्र के डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे जी का समीक्षात्मक लेखन नई सोच, नए विचारो से आधुनिक विचारों को जोड देती है। स्त्री शिक्षा, सामाजिक एकता, दलित चिंतन की पुरोधा कर्मभूमी रही है। इस भूमि में लातुर जिले के एक व्यक्ति, जो अपनी साहित्य साधना में विगत तीन दशकों से लीन है। इस साधक का नाम है। डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे।

डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे। ने हिंदी अध्ययन, अनुसंधान, अध्यापन, संगठन, सृजनात्मक लेखन, अनुवाद ओर आलोचना आदि क्षेत्रों को समृध्द किया है । हिंदी साहित्य जगत् में यशस्वी चहलकदमी करते हुए अपने अस्तित्व की अमिट छाप छोडी है ।

शोध की उपयोगिता :

डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे। जी का जीवन संघर्षमय होते हुए भी प्रतिभासंपन्न एवं बहुआयामी रहा है । प्रतिकूल परिस्थितियों अपनी प्रतिभा एवं कर्तृत्च के आधार पर परिश्रम के द्‌वारा सवकुछ हासिल करते रहे है । परिरम के साथ ही अपने तत्व तथा मुल्यों के साथ कभी समझौता नहीं किंया । वे कहते है मुझे मेरी दृष्टि ने मार्क्सवादी बनाया है । लेकिन मार्क्सवादी बने में उनका अपना अनुभव है । यह थोपा हुआ अनुकरण नही है ।

डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे जी का साहित्य समाज की दृष्टी से महत्वपूर्ण है । वह समाज के प्रति अपना दायत्वि समझकर लेखन करत है । उनके लेखन का उद्देश्य समाजिक प्रतिबद्धता है ।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने शोध प्रबंध को निम्नांकित पॉच अध्यायों में विभाजित कर विषय का विवेचन प्रस्तुत करना मेरा लक्ष्य रखा है ।

प्रथम अध्याय : डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे व्यक्तित्व एवं कृतित्व

इस अध्याय के अंतर्गत डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे का परचय दिया जाएगा । जिसमें उनका जन्म, बचपन, शिक्षा-दीक्षा, परिवार, विवाह, व्यवसाय आदि पर विवेचन तथा डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे की साहित्यिक कृतियों का संक्षिप्त परिचय दिया जाएगा ।

द्वितीय अध्याय : अस्मितावादी साहित्य

२.१ भारतीय समाजिक संरचना, स्वरुप एवं विकास

२.२ श्रेणीबद्ध समाज राचनाओं से विद्रोह

२.३ अस्मितावादी साहित्य का आरंभ, विकास और प्रसार

२.४ दलित साहित्य

२.५ स्त्री वादी साहित्य

२.६ आदिवासी साहित्य

तृतीय अध्याय : अस्मितावादी साहित्य में डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे की समीक्षा

३.१ हिंदी दलित आत्मकथा की समीक्षा

३.२ हिंदी दलित कविता की समीक्षा

३.३ हिंदी दलित उपन्यास की समीक्षा

३.४ हिंदी दलित अन्य विधाओं की समीक्षा

३.५ अनुवाद परंपरा की समीक्षा

चतुर्थ अध्याय : अन्य अस्मितावादी साहित्य में. डॉ. सूर्यनारायण रणसूभे

४.१ स्त्रीवादी साहित्य की समीक्षा

४.२. आदिवासी साहित्य की समीक्षा

४.३ हिंदु- मुस्लिम संबंधो की समीक्षा

पंचम अध्याय : अस्मितावादी साहित्य में. डॉ. सूर्यनारायण रणसूभे का योगदान इस अध्याय के अंतर्गत अस्मितावादी साहित्य को डॉ. सूर्यनारायण रणसूभे का योगदान इस का विवेचन किया जायेगा ।

उपसंहार :

समग्र अध्याय लेखन के उपरान्त जो निष्कर्ष प्राप्त होंगे वे साररुप में उपसंहार में दर्ज किए जाएंगे । साथ ही समग्र अध्याय के उपरान्त प्राप्त उपलब्धियॉ प्रस्तुत की जाऍगी ।

आधार ग्रंथ सूची :

अ.क्र.	ग्रंथ	लेखक	प्रकाशक	वर्ष
१.	अक्करमाशी	डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे	ग्रंथ अकादमी	१९९१
२.	उन्नसवीं सदी में नवजागरण	डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे	कुलसचिव य. च.म.वि.नाशिक	२००२
३.	जीवनी परक साहित्य	डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे	कुलसचिव य. च.म.वि.नाशिक	२००१
४.	कानीकार कमलेश्वर संदर्भ और प्रकृति	डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे	पंचशील प्रकाशन	१९७७
५.	देश विभाजन और हिंदी कथा साहित्य	डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे	संचयन प्रकाशन	१९८७
६.	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर	डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे	राधाकृष्ण प्रकाशन	१९९१
७.	बीसवीं सदी मे नवजागरण	डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे	कुलसचिव य. च.म.वि.नाशिक	२००२
८.	समाज परिवर्तन की दिशाऍं	डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे	भावना प्रकाशन	१९९९

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

अ.क्र.	ग्रंथ	लेखक	प्रकाशक
१.	हिंदी उपन्यास विविध आयाम	डॉ. चं.सोनवणे डॉ. रणसुभे डॉ.ओ.होलीकर	पुस्तक संस्थान, कानपुर
२.	हिंदी साहित्य का अभिनव इतिहास	डॉ. रणसुभे प्रा.घनश्यामदास भुतडा	शारदा प्रकाशन, नांदेड
३.	हिंदी नाटक और रंगमंच	सं. राजमल बोरा नारायण शर्मा	पंचशील प्रकाशन, जयपुर
४.	हस्ताक्षर	सं.शमीम शर्मा	हस्ताक्षर प्रकाशन थानेसर

शोध – कर्ता,

श्री. जब्बारखान मियाखान मोकाशी

शोध- निर्देशक,

डॉ. प्रदीप शिवराम सूर्यवंशी

सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग,

दयानंद कला महाविद्लाय, लातुर ।